ब्रेंडा फ्लैनेगन

"लिखो वही, जो पढ़ा जाना चाहिए"

कैटलिन आर. मैक्वी

हेमंत भटनागर

लकड़ी के मंच पर चढ़ते हुए ब्रेंडा फ्लैनेगन हंसीं और बोलीं, ''मुझे तो यूं लग रहा है जैसे मैं घर लौटी हूं।'' ऊर्जा से भरपूर यह अश्वेत अमेरिकन-कैरिबियन लेखिका दिल्ली के दयालसिंह कॉलेज के 120 छात्रों और अध्यापकों से मुखातिब थीं।

फ्लैनेगन बता रही थीं कि त्रिनिडाड में बीते उनके जीवन के शुरू के 19 सालों में भारतीय मूल के पड़ोसियों और मित्रों की बदौलत भारत की गंध और ध्वनियां हमेशा मौजूद रहीं। वर्गों में बंटे त्रिनिडाडी समाज में एक गरीब परिवार में जन्मी ब्रेंडा ने अपने हालात को अपने सपनों को साकार करने में आड़े नहीं आने दिया। वह अमेरिकी युवाओं को एक ही संदेश देना चाहती हैं: ''अपने आसपास की घटनाओं से विचलित हुए बिना अपने सपनों को साकार कर पाने की संभावना में विश्वास बनाए रखो। पैसे की कमी के कारण हाईस्कूल की पढ़ाई पूरी न कर पाने पर भी ब्रेंडा हताश नहीं हुईं। उनका संबल थीं बचपन में हार्पर्स पत्रिका के एक पुराने अंक में पढ़ीं ये पंक्तियां: *द वुड्स आर लवली, डार्क एंड डीप, एंड आइ हैव प्रॉमिसेज टु कीप, एंड माइल्स टु गो बिफोर आइ स्लीप, एंड माइल्स टु गो बिफोर आइ स्लीप (खूबसूरत हैं जंगल -अंधेरे और घनेरे, मुझे पूरे करने हैं वादे बहुतेरे, और लंबे सफर पूरे करने हैं मुझको, तभी सो सकूंगा)*

वह कहती हैं, ''मेरा दिल कहता था कि यदि मैं अमेरिका पहुंच गई तो मैं अपने सपने साकार कर सकूंगी।'' उस समय उन्हें यह नहीं पता था कि ये पंक्तियां रॉबर्ट फ्रॉस्ट की कविता से ली गई हैं। ब्रेंडा सितंबर में कोलकाता और नई दिल्ली के छात्रों और अध्यापकों को 'कलराइजिंग द कैनन' पर भाषण देने के लिए अमेरिकी विदेश विभाग के सांस्कृतिक दूत के रूप में भारत आई थीं। इसी मसले पर वह मास्को, ट्यूनीशिया, लीबिया, कजाकस्तान, तुर्कमेनिस्तान, चाड और पनामा के शिक्षाविदों के बीच अफ्रीकी-अमेरिकी साहित्य, उसके प्रभाव, बहुसंस्कृतिवाद और विविधता पर चर्चा कर चुकी हैं।

1967 में ब्रेंडा जब अमेरिका पहुंचीं तो उनके पास कुल दस डॉलर थे। उस समय वह 19 साल की थीं और हाईस्कूल भी पास नहीं किया था। वह यहां कोई नौकरी करके त्रिनिडाड में अपने परिवार की मदद कर पाने के इरादे से आई थीं लेकिन उनके मन में पढ़-लिख कर अपने देश के प्रधानमंत्री की तरह सम्मान अर्जित करने की इच्छा बसी थी। छात्रों को मिलने वाले कर्जों के बूते सामान्य शिक्षा डिप्लोमा पाने के बाद सफलता पाने के दृढ़ निश्चय से प्रेरित ब्रेंडा 'नौकरानी, फैक्ट्री मजदूर, होटल और अस्पताल की सफाईकर्मी के पड़ाव पार करती स्कूल, कॉलेज के रास्ते अपने सपनों को साकार करने की मंजिल की और बढ़ती गई। 1977 में उन्होंने प्रिंट पत्रकारिता में बी.ए. किया। बाद में शैक्षिक प्रौद्योगिकी पत्रकारिता में स्नातकोत्तर उपाधि पाई और फिर यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन से जन स्वास्थ्य शिक्षा में डॉक्टरेट किया। वह शब्दों की ताकत में विश्वास करती थीं और मानती थीं कि अगर आपको लोगों को यह समझा पाने का मौका मिले कि आप क्या चाहते हैं और वह कैसे किया जाए तो वे आपकी मदद करते हैं। वह कहती हैं, ''अमेरिका में मैंने जो भी मांगा, मुझे मिला। किसी ने भी, कभी भी, मुझे मना नहीं किया।''

उनका अनुभव हर जगह के लोगों के लिए प्रेरणास्पद है। भारतीयों के लिए तो खासतौर पर जहां जाति आज भी लोगों की सीमाएं तय करती है और अवसरों तक पहुंच को नियंत्रित करती है। जाति के खांचे से बाहर निकल पाने का अर्थ है तेज धारा के विरुद्ध तैरना। वह कहती हैं, ''जाति असल में तो वर्ग है, जाति और वर्ग का चोली-दामन का साथ है। मैं त्रिनिडाड में पली-बढ़ी जहां आमतौर पर नस्ल की बात की नहीं जाती, लेकिन हम बहुत अच्छी तरह जानते थे कि जाति और वर्ग बहुत महत्वपूर्ण हैं।'' ब्रेंडा अफ्रीकी-अमेरिकी और कैरिबियन साहित्य पर केंद्रित रहती हैं। पश्चिमी बंगाल में अंग्रेजी साहित्य के अध्यापकों और

लेखकों से मिलकर उन्हें समझ में आया कि वे लोग अफ्रीकी -अमेरिकी साहित्य से लगाव का अनुभव करते हैं क्योंकि ''अफ्रीकी-अमेरिकी लेखन के विषय खुद उन की अपनी संस्कृति के बहुत करीब हैं। वे उसमें वर्णित संघर्षों से संबल पाते हैं।''

कम उम्र में ही अनजाने में एक श्वेत अमेरिकी पुरूष कवि से प्रेरणा पाने की बात छिड़ने पर वह कहती हैं, ''मैंने साहित्य की शक्ति को पहचाना। यह नस्ल, लिंग, संस्कृति और राष्ट्र की सीमाओं में नहीं बंधता।'' इसीलिए वह उत्तरी कैरोलिना के डेविडसन कॉलेज में अफ्रीकी-अमेरिकी साहित्य, कैरिबियन साहित्य की लिखाई-पढ़ाई से समय निकालकर अफ्रीकी-अमेरिकी साहित्य और लोगों की उपलब्धियों और परेशानियों के बारे में भाषण देने और उन पर चर्चा करने के लिए दुनिया के कोने-कोने में लोगों से मिलती हैं। उनके अनुसार, ''जाति का अर्थ है कि कुछ लोग सरकार और संस्थानों के जिन स्तरों तक हर किसी की पहुंच संभव होनी चाहिए, वहां लोगों के प्रवेश को बाधित कर रहे हैं। ऐसे लोग हैं जो मानते हैं कि सकरात्मक पहल जैसी कोई चीज नहीं होती। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग में जन्मे व्यक्ति को बराबरी के मौके दिलाने के लिए सकारात्मक पहल का कोई कानून नहीं है।''

अपने सपने साकार करने के बाद उनकी यात्राओं और लेखन के पीछे एक प्रेरणा रही है, ''लोगों में आशा जगाना कि त्रिनिडाड से आई उस लड़की की तरह वे भी कुछ पा सकते है।'' वह कहती हैं कि दिक्कत यह है कि लोग चाहते हैं कि व्यवस्था बदले लेकिन रोजमर्रा के जीवन में एक-दूसरे की मदद करना बहुत जरूरी है और समाज में बदलाव के लिए जरूरी है कि हम अपने आसपास के लोगों और खुद की मदद के लिए पहलकदमी करें। वह कहती हैं कि जाति या वर्ग की सीमा तोड़ पाना पहला कदम है लेकिन ''आपके पास अपने सपने को पूरा करने के लिए एक स्पष्ट योजना भी होनी चाहिए-यह कैसे किया जाएगा, हमें क्या झेलना होगा। सपनों को साकार करने की राह में ढेरों बाधाएं आएंगी लेकिन हमें इन्हें अवसरों की तरह देखना सीखना होगा।''

जब उनसे पूछा गया कि वह भारत से क्या साथ ले जा रही हैं, तो ब्रेंडा का जवाब था, ''मैं सब को बताना चाहूंगी कि भारत में अमेरिकी साहित्य को कितना पसंद किया जाता है और भारतीय प्रोफेसर किस तरह जानने को तत्पर रहते हैं।'' उन्होंने कहा कि साहित्य पढ़ाना बहुत अकेलेपन का अहसास दिलाने वाला हो सकता है। खुद अमेरिका में ही महान अफ्रीकी-अमेरिकी, मूल अमेरिकी और स्पेनी मूल के अमेरिकी लेखकों की ज्यादा कद्र नहीं है। 17 से अधिक कहानियों, कविताओं, एक नाटक, उपन्यास ***यू अलोन आर डांसिग*** (यूनिवर्सिटी ऑफ मिशिगन प्रेस) और कथा संग्रह *इन प्रेज आफ आईलेंड विमैन एंड अदर क्राइम्स* (कारू प्रेस) की लेखिका होने के नाते ब्रेंडा जानती हैं कि विविध स्रोतों से मिली प्रशंसा कितनी आश्वस्त करती है। ''अगर लोग यह जानें और समझें कि हम जो कर रहे हैं, उसका दुनियाभर में असर होगा, तो मुझे लगता है कि लोग अपने प्रयासों को जारी रखने की जरूरत स्वीकार करेंगे। वे इस बात को खुलकर स्वीकार करेंगे कि जो बातें कही जानी चाहिएं, उन्हें कहे जाने की जरूरत है और जो चीजें पढ़ी जानी चाहिएं, उन्हें लिखने की जरूरत है।'' □

लेखिका: *बेलिंगहम (वाशिंगटन) की वेस्टर्न वाशिंगटन यूनिवर्सिटी की राजनीति शास्त्र की छात्रा कैटलिन आर. मैक्वी ने यह लेख अमेरिकी दूतावास के पब्लिक अफेयर्स ऑफिस में प्रशिक्षण के दौरान लिखा।*

उषा मुजू-मुंशी

प्रमुख, इनफॉर्मेटिक्स सेंटर
भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली

फुलब्राइट स्कॉलर, 1996-97
यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड, कॉलेज पार्क

"मुझे एक व्याख्यान देने को कहा गया। मैं मैरीलैंड विश्वविद्यालय के पुस्तकालय की संदर्भ डेस्क पर गई और वहां मौजूद लाइब्रेरियन से मदद का आग्रह किया। उसने कहा, 'मैं देखूंगी कि क्या कर सकती हूं।' अगले दिन सुबह मैंने अपने कमरे में झांककर देखा तो हैरान रह गई। एक लिफाफे में कुछ दस्तावेजों की प्रतिलिपियां और संदर्भ सामग्री थी। मुझे ठीक इन्हीं चीजों की तलाश थी। व्याख्यान के बाद मैंने व्यक्तिगत रूप से जाकर लाइब्रेरियन को धन्यवाद दिया।"

एरिक रिसबर्ग © ए.पी.- डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

अमेरिकियों को पसंद हैं

सेल्फ हेल्प किताबें

स्टीव होलगेट

कुछ किताबों के नाम ही सब कुछ कह जाते हैं: *ओवरकमिंग एंगर, द सेवन हैबिट्स ऑफ हाइली इफेक्टिव पीपॅल, डॉ. एटकिंस डाइट रेवॅल्यूशन।* कुछ दूसरे नाम किताबों के बारे में इतना खुलकर नहीं बताते लेकिन ये अंदाजा दे देते हैं कि उनके अंदर क्या सामग्री है: *चिकन सूप फॉर द सोल, अवेकन द जायंट विदिन, डोंट स्वैट द स्मॉल स्टफ।* और कुछ किताबों के नाम ऐसे होते हैं कि उनमें शायद कुछ ज्यादा ही

वादे किए गए होते हैं, लाइफ *विदाउट लिमिट्स: कॉंकर युअर फीयर्स, अचीव युअर ड्रीम्स, एंड मेक युअरसैल्फ हैप्पी।*

आपको अंदाजा लग ही गया होगा कि ये अमेरिका की सबसे लोकप्रिय सेल्फ-हेल्प किताबों में से कुछ के नाम हैं। इनमें से कई के अनुदित संस्करण भी उपलब्ध हैं। कई तरह की भिन्नताएं होने के बावजूद इनमें बहुत-सी समानताएं हैं। इनकी प्रस्तुति का अंदाज आशा जगाने वाला होता है और ये पाठक से सीधे, स्पष्ट भाषा में मुखातिब होती हैं। ये आभास देती हैं कि ये पाठक को ज्यादा पूर्ण, ज्यादा समृद्ध जीवन जीने में सक्षम बना सकती हैं।

हर साल अमेरिका के लोग ज्यादा छरहरे, शांत, स्मार्ट, अमीर और आकर्षक बनने के लिए करोड़ों किताबें खरीदते हैं। नामी सेल्फ-हेल्प किताबों के लेखक बड़े-बड़े फिल्मी सितारों और खिलाड़ियों जितने ही लोकप्रिय हो सकते हैं। बिक्री के रिकॉर्ड बनाने वाली *सेल्फ मैटर्स* सहित अनेक सेल्फ-हेल्प किताबों के लेखक फिलिप सी. मैक्ग्रॉ एक बेहद लोकप्रिय टेलिविजन शो के होस्ट हैं। *द प्रॉपर केयर एंड फीडिंग ऑफ हज्बैंड्स* की लेखिका लॉरा श्लेसिंगर भी इसी तरह अपनी लोकप्रियता को मल्टीमीडिया की दुनिया में भी भुनाने में सफल रही हैं। *अवेकन द जायंट विदिन और अनलिमिटेड पावर* सहित कई लोकप्रिय सेल्फ-हेल्प पुस्तकों के लेखक एंथनी रॉबिन्स के दुनियाभर में भारी संख्या में प्रशसंक हैं।

अमेरिका की स्थापना के समय से ही खुद में सुधार लाने से जुड़ी किताबें अमेरिकी संस्कृति का हिस्सा रही हैं। अमेरिका की आजादी के समय *न्यूयॉर्क टाइम्स की सर्वाधिक बिक्री वाली पुस्तकों की सूची* का अस्तित्व रहा होता तो बेंजामिन फ्रैंकलिन की लिखी *पुअर रिचर्ड्स आल्मानैक* उसमें शीर्ष पर होती। व्यावहारिक सुझाव और सारगर्भित सलाह के इसके नुस्खे-जैसे 'एक दमड़ी बचाई तो समझो एक दमड़ी कमाई', और 'जल्दी सोए जल्दी जगे, सेहत-दौलत-बुद्धि बढ़े' -आज भी बहुत-सी सेल्फ-हेल्प किताबों का चरित्र बता देते हैं। वैसे किताबों की मदद से खुद को सुधारने का विचार अमेरिकी गणराज्य की स्थापना से बहुत पहले से चला आ रहा था। प्राचीन थीबीज के विशाल पुस्तकालय के दरवाजे पर लिखा था, 'आत्मा का आरोग्य-निकेतन।'

ऐसा भी नहीं है कि सेल्फ हेल्फ किताबों की लोकप्रियता अमेरिका तक ही सीमित हो। जहां कहीं भी लिखित भाषा का अस्तित्व है, वहां सेल्फ-हेल्प किताबें बिकती हैं, या कम से कम विदेशी किताबों के अनुदित संस्करण होते हैं। पेइचिंग टाइम्स के अनुसार चीन में सार्स की महामारी के बाद किताबों की दुकानों में खास तौर से आत्मबोध बढ़ाने और हानि और दुर्भाग्य से संबंधित किताबों की भरमार है। स्त्रियों से जुड़े मुद्दों पर फातिमा मर्निसी की युगांतरकारी किताबों की लोकप्रियता मोरक्को से परे तक फैली है। अब ब्रिटेन के प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर भी इस मंडली में जुड़ गए हैं। उन्होंने एक किताब लिख डाली, *हाउ टु डील विद प्रॉब्लम्स: द टोनी ब्लेयर वे।* लेकिन अमेरिकी सेल्फ-हेल्प किताबों की खासियत है अमेरिकी राष्ट्रीय चरित्र की झलक, 'कमर कस कर खड़े हो जाओ' का वह सूत्र जो अमेरिकियों में अंतर्निहित कुछ अक्खड़ से व्यक्तिवाद को बहुत भाता है।

बेस्टसेलर्स की आधुनिक लहर की शुरूआत संभवत: 1940 के दशक के आखिरी सालों में डेल कार्नेगी की *हाउ टु विन फ्रेंड्स एण्ड इंफ्लुएंस पीपल* के प्रकाशन से हुई। लेकिन कुछ लोग मानते हैं कि धमाका 1960 के दशक के आखिरी और 1970 के दशक के शुरूआती बरसों में *गेम्स पीपल प्ले* और *आएम ओ.के., यूआर ओ.के.* जैसी किताबों से प्रकाशन से हुआ। यह बड़ी सामाजिक उथलपुथल का वह दौर था जब अमेरिकी अपने संस्थानों पर सवाल उठा रहे थे। इसके बाद के वर्षों में सेल्फ-हेल्प किताबें संदेहवादियों और व्यंग्यकारों के निशाने पर रहीं। फिर भी उनकी आशावादी दृष्टि, सीधीसादी शैली और खुद को बेहतर बनाने पर दिया गया जोर पाठकों को बेहद आकर्षक लगता रहा है। इनकी लोकप्रियता का कारण कुछ हद तक तो यह है कि ये किताबें संसार भर के लोगों के सामने मौजूद ढेरों चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए मशविरा और प्रोत्साहन देती हैं। कुछ अकेलेपन या अवसाद से जूझने या फैलती कमर से निपटने के तरीके बताती हैं तो कुछ लोगों को मजबूत परिवार बनाने के नुस्खे सुझाती हैं। कुछ किताबें अध्यापकों को कक्षा में बेहतर तरीके से पढ़ाने के बारे में बताती हैं तो कुछ लड़कियों को स्त्रीत्व की खास चुनौतियों को झेलने के बारे में बताती हैं। कुछ अन्य लड़कों को कक्षा के मुस्टंडों से पार पाने के गुर सिखाती हैं। बहुत-सी किताबें वित्त और विवाह प्रबंधन के उपाय बताती हैं। ये किताबें धार्मिक तो बिल्कुल नहीं होतीं लेकिन ज्यादातर में बहुत आध्यात्मिक पुट झलकता है।

सायकॉलॉजी टुडे में छपे एक लेख में बताया गया है कि अमेरिका में इन दिनों पाककला सिखानेवाली किताबों से कहीं ज्यादा संख्या में सेल्फ-हेल्प किताबें उपलब्ध हैं। यह लेख चेताता है कि कुछ किताबें जटिल समस्याओं का अतिसरलीकरण करते हुए पाठकों को गुमराह करती हैं। इनसे ऐसा लगता है कि गंभीर चुनौतियों के हल ढूंढना कितना आसान है। लेख में यह भी माना गया है कि कई किताबें सार्थक परिवर्तन के लिए जरूरी कौशल जुटाने में लोगों की सहायता करती हैं और उन्हें प्रेरणा देती हैं। ☐

हेमंत भटनागर

लेखक: *स्टीव हॉलगेट अमेरिकी विदेश मंत्रालय के ब्यूरो ऑफ इंटरनेशनल इन्फॉर्मेशन प्रोग्राम्स द्वारा प्रकाशित वाशिंगटन फाइल के विशेष संवाददाता हैं।*